An awareness Programme on "Cultivation of Indian Sandalwood in Agroforestry" was jointly organized by ICFRE-ERC, Prayagraj and ICFRE-IWST, Bangalore on 23.02.2023 in ICFRE-ERC. Dr. Sanjay Singh, Centre Head and Scientist G welcomed guests and participants in the programme. Dr. Singh emphasized on economic importance of Indian Sandalwood and briefed to farmers/stakeholders of the region for adoption of *Santalum album* based agroforestry in view of its suitability and high market price of sandalwood oil.

The programme coordinator, Dr. Anubha Srivastav, Scientist D presented a small introduction of agroforestry with established agroforestry models of eastern UP with tree economics for species as – *Eucalyptus; Poplar; Tectona grandis; Melia Dubia, Melia azederach, Moringa oleifera, Bamboos; Gmelina arborea, Phyllanthas emblica* etc.

The special invited speaker Dr. R Sundararaj, Scientist G, IWST, Bangalore presented suitability of Indian Sandalwood cultivation in the state of Uttar Pradesh in details. He focused on its cultivation and nursery technique as land preparation, spacing in plants, intercrops, pruning and other management techniques for growth and development of tree. Dr. Sundarraj also highlighted the economics of tree and its marketing prospects in Uttar Pradesh. In the programme, more than 50 farmers/ stakeholders of Prayagraj and Pratapgarh District participated. One farmer of Pratapgarh has already grown 500 trees of Sandalwood before 3 years in the guidance of IWST and he inspired other farmers too in his address for its adoption in agroforestry assured to give planting material to other farmers from his nursery of Sandalwood. Dr. Anita Tomar, Scientist F proposed vote of thanks. Dr. Kumud Dubey, Scientist E, Shri Alok Yadav, Scientist E, Dr. S. D. Shukla, STO, Ratan Kumar Gupta, TO and research scholars of ERC were present In the programme.

चंदन के लिए उपयुक्त उत्तर प्रदेश की जलवायु

कार्यशाला

पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित विशेषज्ञ। ● हिन्दुस्तान

प्रयागराज, वरिष्ठ संवाददाता। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र प्रयागराज व काष्ठ विज्ञान प्रौद्योगिकी संस्थान बंगलुरू की ओर से पूर्वी उत्तर प्रदेश में चंदन के पौधे को बढ़ावा देने के लिए एक दिनी कार्यशाला हुई। विशिष्ट वक्ता डॉ. आर सुंदरराज ने कहा कि उत्तर प्रदेश की जलवायु चंदन के लिए पूरी तरह से उपयुक्त है। इसके लिए कुछ बातों का ज्ञान होना जरूरी है। जिसके बाद बड़ी संख्या में चंदन के पौधे रोपे जाएंगे। उन्होंने कहा कि चंदन पेड़ के हार्टवुट से लगभग 10 किलोग्राम सुगंधित तेल मिलता है, जो बाजार में 12500 रुपये प्रति किलोग्राम बिकता है।

केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह सिंह ने प्रतिभागियों व अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने चंदन के आर्थिक महत्व को बताया। डॉ. संजय सिंह ने कहा कि केंद्र की ओर से उत्तर प्रदेश में चंदन के पौधे को अधिक रोपने के लिए अभियान चल रहा है। इस क्रम में उत्तर प्रदेश में कानपुर, सहारनपुर में कार्यशाला हो चुकी है। प्रतापगढ़ में चंदन के पौधे रोपे जा रहे हैं। वहीं प्रयागराज में भी राममूर्ति भारतीय ने चंदन के पौधे रोपे हैं।

कार्यक्रम समन्वयक वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कृषिवानिकी के परिचय के साथ आर्थिक लाभ की जानकारी दी। धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने किया। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दुबे, आलोक यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला, तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता आदि मौजूद रहे।

अमृत कलश टाइम्स

प्रयागराज शुक्रवार 24 फरवरी 2023

उत्तर प्रदेश की जलवायु चन्दन के लिए उपयुक्त: डॉ. आर. सुन्दरराज

प्रयागराज। पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज तथा काष्ठ विज्ञान प्रऔद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर के संयुक्त तत्वाधान में गुरुवार को पूर्वी उ.प्र. में भारतीय चन्दन वृक्ष की खेती विषय पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने चन्दन के आर्थिक महत्व को बताते हुए क्षेत्र विशेष में चन्दन को कृषियानिकी में अपनाने हेतु आह्वान किया। कार्यक्रम समन्वयक डा. अनुभा श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा कृषियानिकी के परिचय के साथ क्षेत्र में स्थापित कृषियानिकी प्रजातियों यथा यूकेलिप्टस, पॉपलर, सागौन, गम्हार, बाँस, बर्माड्रेक, सहजन, बकैन, आंवला, आम, महुआ आदि प्रजातियों की आर्थिकी पर प्रकाश डाला। विशिष्ट वक्ता डॉ. सुन्दरराज ने क्षेत्र की जलवायु को चन्दन हेतु उपयुक्त बताते हुए बीज द्वारा नर्सरी विधियों, पौधरोपण हेतु क्षेत्र की तैयारी, गड्ढा खुदान, दूरी, अंतरफसले तथा साथ में किसी भी दलहनी फसल जैसे अरहर, अगस्ती आदि को पौधों से 1 फीट की दूरी पर लगाना जरूरी बताया, जिससे चन्दन के पौधे का उचित विकास हो सके। अन्य तकनीकी जानकारी में उन्होंने चन्दन पेड़ की छटाई हेतु भी मना किया। क्योंकि वृक्ष का संतुलन, वृद्धि तथा बीमारी आदि से तभी बचाव होगा। इस वृक्ष के हार्टवुड से लगभग 10 किग्रा सुगन्धीय तेल प्राप्त होता है जो लगभग 12500 प्रति किग्रा बिक्री द्वारा 15 वर्ष के बाद 1 वृक्ष से लगभग 1.25 लाख की आमदनी प्राप्त की जा सकती है। प्रतापगढ़ के चिलबिला क्षेत्र के उन्नत कृषक उत्कृष्ट पाण्डेय ने काष्ठ विज्ञान एवं प्रऔद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर के निर्देशन में लगभग 2 एकड़ क्षेत्र में 500 वृक्ष तथा 1000 पौधो से अधिक की नर्सरी भी तैयार किया है, ने अपने अनुभव कृषकों से साझा किया। कार्यक्रम में पी. एन. सिंह, भा. व. से. (से. नि.) तथा प्रयागराज, प्रतापगढ़ आदि के समीपवर्ती क्षेत्रों से लगभग 50 से अधिक किसानों ने बढ़ – चढ़कर भाग लिया। धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे, आलोक यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एस. डी. शुक्ला, तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता तथा विभिन्न शोध छात्र – छात्राएं आदि उपस्थित रहे।

चंदन के लिए उपयुक्त है उत्तर प्रदेश की जलवायु : डॉ. आर सुंदरराज

मंत्र भारत संवाददाता

प्रयागराज। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र प्रयागराज व काष्ठ विज्ञान प्रौद्योगिकी संस्थान बंगलुरू की ओर से पूर्वी उत्तर प्रदेश में चंदन के पौधे को बढ़ावा देने के लिए एक दिनी कार्यशाला हुई। विशिष्ट वक्ता डॉ. आर सुंदरराज ने कहा कि उत्तर प्रदेश की जलवायु चंदन के लिए पूरी तरह से उपयुक्त है। इसके लिए कुछ बातों का ज्ञान होना जरूरी है। जिसके बाद बड़ी संख्या में चंदन के पौधे रोपे जाएंगे। उन्होंने कहा कि चंदन पेड़ के हार्टवुट से लगभग 10 किलोग्राम सुगंधित तेल मिलता है, जो बाजार में 12500 रुपये प्रति किलोग्राम बिकता है।

केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह सिंह ने प्रतिभागियों व अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने चंदन के आर्थिक महत्व को बताया। डॉ. संजय सिंह ने कहा कि केंद्र की ओर से उत्तर प्रदेश में चंदन के पौधे को अधिक रोपने के लिए अभियान चल रहा है। इस क्रम में उत्तर प्रदेश में कानपुर, सहारनपुर में कार्यशाला हो चुकी है। प्रतापगढ़ में चंदन के पौधे रोपे जा रहे हैं। वहीं प्रयागराज में भी राममूर्ति भारतीय ने चंदन के पौधे रोपे हैं।

कार्यक्रम समन्वयक वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कृषिवानिकी के परिचय के साथ आर्थिक लाभ की जानकारी दी। धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने किया। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दुबे, आलोक यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला, तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता आदि मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश की जलवायु चन्दन के पेड़ के लिए उपयुक्त : डॉ. आर. सुन्दरराज

प्रयाग केसरी संवाददाता

प्रयागराज। पारिस्थितिकी पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज तथा काष्ठ विज्ञान प्रऔद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर के संयुक्त तत्वाधान में पूर्वी उ.प्र. में भारतीय चन्दन वृक्ष की खेती विषय पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने चन्दन के आर्थिक महत्व को बताते हुए क्षेत्र विशेष में चन्दन को कृषिवानिकी में अपनाने हेतु आह्वान किया। कार्यक्रम समन्वयक डा. अनुभा श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा कृषिवानिकी के परिचय के साथ क्षेत्र में स्थापित कृषिवानिकी प्रजातियों यथा यूकेलिप्टस, पॉपलर, सागौन, गम्हार, बाँस, बर्माड्रेक, सहजन, बकैन, आंवला, आम, महुआ आदि प्रजातियों की आर्थिकी पर प्रकाश डाला। विशिष्ट वक्ता डॉ. सुन्दरराज ने क्षेत्र की जलवायु को चन्दन हेतु उपयुक्त बताते हुए बीज द्वारा नर्सरी विधियों, पौधरोपण हेतु क्षेत्र की तैयारी, गड्ढा खुदान, दूरी, अंतरफसले तथा साथ में किसी भी दलहनी फसल जैसे अरहर, अगस्ती आदि को पौधों से 1 फीट की दूरी पर लगाना जरूरी बताया, जिससे चन्दन के पौधे का उचित विकास हो सके। अन्य तकनीकी जानकारी में उन्होंने चन्दन पेड़ की छटाई हेतु भी मना किया। क्योंकि वृक्ष का संतुलन, वृद्धि तथा बीमारी आदि से तभी बचाव होगा। इस वृक्ष के हार्टवुड से लगभग 10 किग्रा सुगन्धीय तेल प्राप्त होता है जो लगभग 12500 प्रति किग्रा बिक्री द्वारा 15 वर्ष के बाद 1 वृक्ष से लगभग 1.25 लाख की आमदनी प्राप्त की जा सकती है। प्रतापगढ़ के चिलबिला क्षेत्र के उन्नत कृषक उत्कृष्ट पाण्डेय ने काष्ठ विज्ञान एवं प्रऔद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर के निर्देशन में लगभग 2 एकड़ क्षेत्र में 500 वृक्ष तथा 1000 पौधो से अधिक की नर्सरी भी तैयार किया है, ने अपने अनुभव कृषकों से साझा किया। कार्यक्रम में पी. एन. सिंह, भा. व. से. (से. नि.) तथा प्रयागराज, प्रतापगढ़ आदि के समीपवर्ती क्षेत्रों से लगभग 50 से अधिक किसानों ने बढ़ - चढ़कर भाग लिया। धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे, आलोक यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एस. डी. शुक्ला, तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता तथा विभिन्न शोध छात्र - छात्राएं आदि उपस्थित रहे।